डॉ० राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय

अवध अभिव्यक्ति

विश्वविद्यालय की ई–मासिक पत्रिका

15,मार्च 2020
वर्षः 03, अंक–05

रामकथा में सबसे महत्वपूर्ण घटनाक्रम वनगमन है : कोहली 03

नारी सशक्तिकरण के बिना मानवता का विकास अधूरा है : कुलपति 04

भारत के बेटे–बेटियों में राम और सीता के अंश विद्यमान हैंः मृदुला सिन्हा

06 मार्च। संस्कार भारती, डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, ललित कला अकादमी, नई दिल्ली एवं अयोध्या शोध संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में 'लोक में राम' उत्सव–लोक उमंग का दिनांक 04 मार्च से 06 मार्च, 2020 तक आयोजन किया गया।

गोवा की पूर्व राज्यपाल श्रीमती मृदुला सिन्हा ने कहा कि राम के बारे में विस्तार से जानना आवश्यक है। राम की कहानियां जो दादा दादी से सुनी गई है वे लोक के राम है। राम का कद इतना ऊंचा है कि उन्हें भारत की सीमा में नहीं बांधा जा सकता है। विश्व जनम. ानस ने राम को अंगीकृत किया है। बालक के जन्म पर राम के गीत का गायन किया जाता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि देश के कण–कण में राम है। लोक एक विस्तृत आयाम है और लोक में राम हैं। उन्होंने कहा कि वर्तमान सामाजिक संरचना में दादी और नानी का स्थान रिक्त हो रहा है, फिर कहानियां कौन सुनाएगा? भारत के बेटे–बेटियों में राम और सीता के अंश विद्यमान हैं। हमारे राम कहीं भी, किसी से कम नहीं है।

संस्कृति एवं पर्यटन विकास मंत्री नीलकंठ तिवारी ने कहा कि मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम की परिकल्पना अयोध्या में परिलक्षित है। राम राज्य की रूपरेखा वर्तमान संदर्भ में सबसे अधिक प्रासंगिक शासन प्रणाली के लिए जानी जाती है। इतने लम्बे कालखण्ड तक भारतीय संस्कृति जीवित रही, उसका मूलाधार जिस भी परम्परा एवं मूल में देखेंगे तो वहां राम मिलेंगे।

कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए श्रीराम जन्म भूमि तीर्थ क्षेत्र के अध्यक्ष महंत श्री नृत्य गोपाल दास ने कहा कि भगवान राम को समझने के साथ अयोध्या को समझना चाहिए। अयोध्या विश्व की सबसे प्रधान नगरी है। मनु ने अयोध्या को बसाया, उत्तर की दिशा में सरयू बह रही है, अयोध्या को ही विश्व की पाप नाशिनी नगरी के रूप में माना जाता है।

वरिष्ठ साहित्यकार एवं चिन्तक नरेन्द्र कोहली ने कहा कि श्रीराम की परम्पराओं पर कई प्रसंग आते हैं, इसका तुलसी दास एवं वाल्मीकि रामायण में वर्णन मिलता है। राम प्रत्येक काल में प्रासंगिक रहे हैं। तुलसी के राम एवं अन्य विद्वानों के राम में कई विभिन्नताएं हैं। सारा संकट वहीं आता है, जब राम को इतिहास माना जाता है। विवेकानन्द ने कहा था कि भारतीयों ने अपना इतिहास कभी नहीं लिखा। विदेशियों ने भारत का इतिहास लिखा ताकि हम अपनी नजरों में गिर जाए। उन्होंने कहा कि अब आपको अपना इतिहास स्वयं लिखना है। अपने महापुरुषों तक जाओ और उनके मूल ग्रन्थों को अवश्य पढ़ो। अपने आपको खोजना, भगवान राम को खोजना है।

महामंत्री श्रीराम जन्म भूमि तीर्थ क्षेत्र के श्री चम्पत राय ने कहा कि लोक कलाओं और लेखन से आज भी राम हमारे बीच विद्यमान हैं।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 मनोज दीक्षित ने कहा कि सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक नगरी अयोध्या अत्यंत समृद्ध एवं विस्तृत रही है। लोक कलाकारों ने लोककथा के माध्यम से राम को जीवंत रखा। अयोध्या त्याग की भूमि है। विश्वविद्यालय का 45 वां स्थापना दिवस और लोक में राम का कार्यक्रम एक संयोग है। कुलपति ने कहा कि राम के बहुतेरे आयाम हैं। भ्राता राम, भगवान राम, राजा राम, वनवासी राम के अलग–अलग स्वरूपों से रामराज्य की संकल्पना की गई है। अयोध्या के राम की विश्वभर में स्वीकार्यता यह सिद्ध करती है कि राम जनजन के रहे हैं। विश्वविद्यालय परिसर में श्रीराम शोध–पीठ में राम के विभिन्न चित्रों का चित्रण राष्ट्रीय ललित कला के कलाकारों द्वारा किया जा रहा है।

समापन सत्र को संबोधित करते हुए संस्कार भारती के संरक्षक पद्मश्री योगेन्द्र बाबा ने कहा कि राम भारत–भूमि के कण–कण में है। राम ने ही दुनिया में संस्कारों के बीज बोये हैं। अयोध्या में सिर्फ राम का मन्दिर ही नहीं बनेगा बल्कि रामराज्य भी आयेगा।

जिलाधिकारी अनुज झा ने कहा कि राम के प्रति सबके मन में एक भावना बहती है। किसी के लिए भी राम के क्या मायने हैं, यह अलग–अलग रूप में देखने को मिलता है। संस्कारों के बीज बोना समाज में रामराज्य की परिकल्पना से जुड़ा है। जिलाधिकारी ने कहा कि संकट में चमकना राम के चरित्र से सीखा जा सकता है। राम रचनाओं में हैं, कविता में हैं, चित्रों में हैं, इसी के साथ जनम. ानस में है। विश्वभर में राम अलग–अलग रूपों में देखने को मिलते हैं। अनुज झा ने कहा कि अवध के जैसे लोग कहीं नहीं हैं। यह राम का अनुराग है। संस्कारों के बीज बोना भारतीय संस्कृति की विरासत है।

अयोध्या रामतीर्थ ट्रस्ट के विमलेन्द्र मोहन मिश्र ने कहा कि लोक गीतों में रामकथाएं आयीं, इसी से ज्ञान की गंगा का प्रवाह हुआ। 14 वर्षों के संघर्ष ने राम को अद्भुत बनाया। राम की महिमा पर गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित सियाराम मय सब जग जानी... से स्पष्ट है कि राम कितने व्यापक हैं।

संस्कार भारती के महासचिव अमीर चन्द ने कहा कि राम के बनने में लक्ष्मण का बड़ा योगदान रहा। राम का आयाम विश्वव्यापी है। यदि वानरी सेना न होती तो राम न होते। राम के हृदय में हनुमान ने भक्ति के बल पर स्थान पाया।

कार्यक्रम की संयोजिका एवं लोक गायिका पद्मश्री मालिनी अवस्थी ने कहा कि संस्कृति की दृष्टि से राम को समझना होगा। लोक में राम पर हुई बहुआयामी चर्चा ने अवध की इस धरती पर एक नया मुकाम पाया है। राम की व्यापक चर्चा की शक्ति ने भारत को आज भी संजोये रखा है। राम विनम्रता के प्रतीक हैं और हम ऐसे देश के वशंज हैं जहां राम अवतरित हुए।

इस अवसर पर कर्नाटक के कलाकारों द्वारा यक्षगान की प्रस्तुति एवं राजस्थान के मेवात के युसूफ खान के समूह ने राम के भजन की लोक संस्कृति के तहत वाद्ययंत्रों की प्रस्तुति दी।

इस अवसर पर श्रीराम जन्म भूमि तीर्थ क्षेत्र के सदस्य महंत श्री दिनेन्द्रदास एवं श्री अनिल मिश्र, विभिन्न प्रांतों से आये प्रतिनिधिगण एवं विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति प्रो0 एस0 एन0 शुक्ल, परीक्षा नियंत्रक उमानाथ, उपकुलसचिव विनय सिंह, मुख्य नियंता प्रो0 आर0 एन0 राय, कार्यपरिषद सदस्य ओम प्रकाश सिंह, के0 के0 मिश्र, प्रो0 अशोक शुक्ल, प्रो0 के0 के0 वर्मा, प्रो0 हिमांशु शेखर सिंह, प्रो0 एस0 एस0 मिश्र, प्रो0 राजीव गौड़, प्रो0 नीलम पाठक, प्रो0 सिद्धार्थ शुक्ल सहित बडी संख्या में शिक्षक, कर्मचारी एवं विद्यार्थी उपस्थिति रहे।

कोरिया और अयोध्या के सम्बन्ध प्राचीन काल से प्रगाढ़ रहे हैंः जोंग

03 मार्च।डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के 45 वें स्थापना दिवस के अवसर पर स्वामी विवेकानन्द सभागार में शिक्षक, कर्मचारी, छात्र एवं पुरातन छात्र सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। समारोह को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि कोरिया गणराज्य के दूतावास मंत्री जोंग हो चोई ने कहा कि यह विश्वविद्यालय प्रख्यात अर्थशास्त्री राममनोहर लोहिया के नाम पर स्थापित है। विश्वविद्यालय एक प्रमुख शिक्षा के केन्द्र के रूप में है। शीघ्र ही यहां कोरियन संस्कृति अध्ययन केन्द्र की स्थापना की जायेगी। उन्होंने कहा कि कोरिया और अयोध्या के सम्बन्ध प्राचीन काल से ही प्रगाढ़ रहे हैं। कोरिया की राजकुमारी हो अयोध्या से थी। अयोध्या में उनके नाम पर एक विशाल पार्क बनाया जा रहा है, जो भारत एवं कोरिया के रिश्तों को मजबूत कर रहा है।

समारोह की अध्यक्षता कर रहे कुलपति प्रो0 मनोज दीक्षित ने कहा कि आज विश्वविद्यालय 45 वर्ष का हो गया। आज के 05 वर्ष बाद विश्वविद्यालय की स्वर्ण जयंती मनाई जायेगी। 50 वर्षों में विश्वविद्यालय ने समाज को क्या दिया, इसकी समीक्षा अवश्य करनी होगी। प्रो0 दीक्षित ने कहा कि मानवीय संसाधन एक महत्वपूर्ण विषय है। विद्यार्थियों की गुणवत्ता काफी बेहतर हो रही है। एक अच्छा विद्यार्थी एक अच्छा शिक्षक बेहतर समाज का निर्माण कर सकता है। कुलपति ने कहा कि अगले पांच वर्षों में विकास लक्ष्य के लिए विश्वविद्यालय को संकल्प लेना होगा और दिशा तय करनी होगी। जब कार्य अच्छा करेंगे, तो पहचान निश्चित ही बनेगी। विश्वविद्यालय नैक मूल्यांकन की प्रकिया में आ रहा है। निश्चित ही इसके सुखद परिणाम मिलेंगे।

स्थापना दिवस समारोह

विशिष्ट अतिथि कोरिया संस्कृति केन्द्र के वरिष्ठ सलाहकार एच0एच0 किम ने कहा कि भारत के साथ कोरिया के सम्बन्ध काफी पुराने हैं। भारत की युवा पीढ़ी काफी ऊर्जावान है। भारत की प्रतिभा विश्वभर में चमक रही है। पुरातन सभा के अकादमिक सलाहकार अरूण कुमार पाण्डेय ने कहा कि आधकारिक तौर पर 1963 में भारत और कोरिया के राजनैतिक सम्बन्ध बने। परन्तु भारत और कोरिया के रिश्ते चौथी शताब्दी से हैं। अगले कुछ वर्षों में अयोध्या शिक्षा का प्रमुख केन्द्र बनेगी। अधिष्ठाता छात्र–कल्याण प्रो0 आशुतोष सिन्हा ने अतिथियों का स्वागत करते हुए विश्वविद्यालय की प्रगति आख्या प्रस्तुत की।

स्वामी विवेकानन्द सभागार में कार्यक्रम का शुभारम्भ मां सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन के साथ किया गया। समारोह में विश्वविद्यालय की स्थापना से लेकर आज तक की उपलब्धि पर जनसंचार एवं पत्रकारिता विभाग द्वारा डॉक्युमेंट्री दिखाई गई। कार्यक्रम में कौंडिल्य साहित्य सेवा समिति द्वारा अर्धवार्षिक शोध पत्रिका चेतना का विमोचन किया गया।

समारोह के पूर्व परिसर में स्थित प्रचेता भवन के निकट मैदान में मुख्य अतिथि कोरिया गणराज्य के दूतावास मंत्री जोंग हो चोई, कोरिया संस्कृति केन्द्र के वरिष्ठ सलाहकार एच0एच0 किम एवं कुलपति प्रो0 मनोज दीक्षित एवं प्रति कुलपति प्रो0 एस0एन0 शुक्ल सहित अन्य ने पौधारोपण किया।

शिक्षक, कर्मचारी एवं छात्र सम्मानित

विश्वविद्यालय के 45 वें स्थापना दिवस के अवसर पर मुख्य अतिथि एवं कुलपति द्वारा उत्कृष्ट कार्य करने वाले शिक्षकों में विश्वविद्यालय के भौतिकी एवं इलेक्ट्रानिक्स विभाग के प्रो0 एस0 एन0 शुक्ल, एम0बी0ए0 विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो0 आर0एन0 राय, सूक्ष्मजीव विज्ञान विभाग के प्रो0 राजीव गौड़, वाणिज्य संकायाध्यक्ष प्रो0 अशोक शुक्ल, गणित एवं सांख्यिकी विभाग के प्रो0 संत शरण मिश्र, सरस्वती देवी नारी ज्ञानस्थली, गोण्डा की नीलम जीत कौर, का0सु0 साकेत पी0जी0 कालेज के अनुराग मिश्र, पर्यावरण विज्ञान विभाग के डॉ0 प्रकाश चन्द्र तिवारी एवं संत तुलसीदास पी0जी0 कालेज, सुल्तानपुर के डॉ0 समीर कुमार पाण्डेय को प्रशस्ति–पत्र देकर सम्मानित किया गया। कर्मचारियों में सामान्य प्रशासन के डॉ0 मोहन चन्द्र तिवारी, अनुराग श्रीवास्तव, शशांक श्रीवास्तव, दिनेश कुमार तिवारी, जफर सलमान, महेश कुमार, संतोष कुमार पाण्डेय एवं छात्र–छात्राओं में रोहित पाल, चन्द्र प्रकाश आजाद, शिवम प्रजापति, शिवेन्द्र सिंह, जया सिंह, अमन अंसारी, वकास खान, हिया त्रिपाठी शिवेन्दु शेखर को सम्मानित किया गया। पुरातन छात्र सभा की तरफ से विश्वविद्यालय में नैक की तैयारियों के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 मनोज दीक्षित, प्रो0 फारूख जमाल, प्रो0 नीलम पाठक, डॉ0 अभिषेक सिंह, इं0 शोभित श्रीवास्तव, इं0 आर0के0 सिंह को भी प्रशस्ति पत्र भेंटकर सम्मानित किया गया।

मंथन

15 मार्च, 2020: चैत्र, कृष्ण पक्ष, सप्तमी, विक्रम संवत् 2076

'शरीर की सुंदरता उसकी सफाई में है'

स्वच्छता और सतत विकास

मानसिक विकास एवं सामाजिक कल्याण में सुधार के साथ–साथ संक्रमण को रोकने के लिये स्वच्छता एवं स्वास्थ्य बेहद जरूरी है। सुरक्षित स्वच्छता प्रणालियों की कमी के कारण संक्रमण और बीमारियाँ होती हैं। वस्तुतः स्वच्छता की कमी एक प्राथमिक बाधा है, किंतु अन्य मसलों सुरक्षित जल, साबुन से हाथ धोना, पशु अपशिष्ट प्रबंधन तथा मक्खी नियंत्रण पर भी ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है। जल, स्वच्छता एवं स्वास्थ्य अंतर्राष्ट्रीय विकास हेतु प्रमुख सार्वजनिक स्वास्थ्य मुद्दे हैं तथा सतत विकास लक्ष्य के केंद्र बिंदु हैं। स्वच्छता की बहु–क्षेत्रीय प्रकृति को समायोजित करने एवं कार्रवाई की सुविधा के लिये समग्र स्वास्थ्य, शिक्षा, आवास, कृषि, विकास, सार्वजनिक कार्यों तथा पर्यावरण कार्यक्रमों के बीच समन्वय की जरूरत है।

स्वास्थ्य क्षेत्र से संबंधित प्राधिकारी वर्ग की स्वच्छता मानदंडों तथा मानकों के विकास में सक्रिय भूमिका होती है। स्वास्थ्य प्रभाव को अधिकतम करने तथा उसमें निरंतरता बनाए रखने के लिये स्वच्छता सेवाओं एवं निगरानी को स्वास्थ्य सेवाओं में शामिल किया जाना चाहिये। स्वच्छता को बढ़ावा देना एक महत्त्वपूर्ण दायित्व है, जिसे समुदाय, स्कूल और संपूर्ण जनसंख्या से जुड़ी पहलों तथा अभियानों में यथासंभव शामिल किया जाना चाहिये।

संयुक्त राष्ट्र ने अंतर्राष्ट्रीय स्वच्छता वर्ष के साथ 2008 में वैश्विक विकास एजेंडे की शुरुआत की जिसमें स्वच्छता को महत्त्व दिया गया, इसी क्रम में 2010 में सुरक्षित जल एवं स्वच्छता के मानव अधिकार को मान्यता देने तथा 2013 में संयुक्त राष्ट्र के उपमहासचिव द्वारा खुले में शौच को समाप्त करने का आह्वान किया गया है। स्वच्छता का मानवाधिकार सभी को स्वच्छता सेवाओं के अधिकार की प्राप्ति का प्रावधान करता है जो गोपनीयता एवं गरिमा के साथ–साथ शारीरिक रूप से अक्षम लोगों के लिये सुलभ एवं सस्ती, सुरक्षित, स्वच्छ, सामाजिक एवं सांस्कृतिक तौर पर स्वीकार्य सेवाएँ सुनिश्चित करता है। स्वच्छता सेवाओं तक पहुँच सुनिश्चित करने में किसी भी प्रकार की विफलता के लिये राज्य सरकारें जवाबदेह है। पर्यावरणीय स्वास्थ्य भी एक बड़ा मुद्दा है, जिसमें पेयजल सुरक्षा, स्वच्छता, वायु प्रदूषण, कार्यस्थल पर स्वास्थ्य तथा रासायनिक सुरक्षा जैसे विषय शामिल हैं। इसे गतिविधियों के व्यापक समूह के एक हिस्से के रूप में देखा जाना चाहिये जिसमें शिक्षा एवं स्वच्छता को बढ़ावा देना, अंतिम उपाय के रूप में पर्यावरणीय स्वास्थ्य के अपराधियों को दंडित करना शामिल है। लोगों को वांछित परिवर्तन को व्यवहार में लाना होगा, ताकि प्रवर्तन एवं संवर्धन को सेवाओं के विकास तथा सूचना अभियान के साथ समन्वित किया जा सके।

मेरा रंग दे बसंती चोला, मेरा रंग दे...

सौरभ सिंह

भारत की स्वतंत्रता उन असंख्य बलिदानियों के संगठित प्रयास का परिणाम है, जिन्होंने भारत को अंग्रेजी शासन से मुक्त कराने के लिए अपने प्राण न्यौछावर किए हैं। पहली बार स्वतन्त्रता संग्राम की चिंगारी सन् 1857 में उठी और धीरे धीरे एक ज्वालामुखी का रूप लेकर पूरे भारतवर्ष में फैल गयी। भारत के स्वतन्त्रता संघर्ष के इस महायज्ञ में असंख्य वीरों ने आपने प्राणों की आहुति दी। इनमें सरदार भगत सिंह का नाम अग्रिम पँक्ति के क्रांतिकारियों में सम्मिलित है।

बचपन से ही भगत सिंह में अंग्रेजी शासन को भारत से मिटाने की भावना उत्पन्न हो गयी थी। अमृतसर में जलियाँवाला बाग हत्याकांड के समय उनकी उम्र मात्र 12 वर्ष थी। जलियाँवाला बाग हत्याकांड का भगतसिंह के मन मस्तिष्क पर अत्यन्त गहरा प्रभाव पड़ा। इस घटना के बाद उनमें अंग्रेजों को भारत से जल्द से जल्द भगाने की इच्छा और प्रबल हो गयी।

अपने कॉलेज के दिनों में वे चंद्रशेखर आजाद के संगठन 'हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन' और 'नवजीवन सभा' से जुड़े। कालांतर में भारत पर अपनी नीतियों पर पुनर्विचार करने के लिए जब 'साइमन कमीशन' का भारत आना तय हुआ, तो ब्रिटेन संसद के इस फैसले का भारत में प्रबल विरोध किया गया। विरोध करने वाले नेताओं में भगत सिंह और चंद्रशेखर भी थे और सबसे बड़ा नाम लाला लाजपतराय का था। 'साइमन कमीशन' का विरोध कर रहे लाला लाजपत राय की लाठियों से पीट पीटकर हत्या कर दी गयी। इस निर्मम हत्या का प्रतिशोध लेने के लिए अंग्रेज अफसर सांडर्स की गोली मार कर हत्या कर दी गयी।

जिस तथा–कथित अपराध के लिए भगत सिंह को फाँसी दी गयी, वो था सेंट्रल असेंबली पर बम फेंकने की घटना। भगत सिंह ने पूर्व योजना के तहत बटुकेश्वर दत्त के साथ भारत की वर्तमान संसद और तत्कालीन सेंट्रल असेंबली पर कम क्षमता का बम फेंका क्योंकि उनका उद्देश्य किसी के प्राण लेना नहीं था। उन्होंने साफ कहा था कि 'बहरों को अपनी आवाज सुनाने के लिए' बम की जरूरत होती है। इसी तथाकथित अपराध के लिए उन्हें और उनके दो क्रन्तिकारी साथियों सुखदेव और राजगुरु के साथ फाँसी दे दी गयी।

सरदार भगत सिंह की स्वतंत्रता की अपनी परिभाषा थी अर्थात स्वतन्त्रता को लेकर उनका विचार बिल्कुल स्पष्ट था। उनका मत था कि भारत के निर्धन और मजदूर वर्ग के लोगों की भारत की नीति निर्धारण में भागीदारी हो क्योंकि ये नीतियाँ मुख्य रूप से इन्हीं वर्ग के लोगों के लिए बनाई जाती हैं। इसके अतिरिक्त सेंट्रल असेंबली पर बम फेंकने की घटना को मूर्तरूप देने के लिए चंद्रशेखर आजाद, भगत सिंह को भेजने के पक्ष में नहीं थे लेकिन भगत सिंह का मत था कि उनका उद्देश्य बम फेंकना नहीं है, वहाँ पर एक ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता है जो अपने विचारों से वहाँ बैठे ब्रिटिश शासन के प्रतिनिधियों को प्रभावित कर सके।

क्रान्ति के अतिरिक्त एक दूसरा पक्ष जिसने भगत सिंह को क्रन्तिकारी बनने के लिए प्रेरित किया वह यह था कि भगत सिंह एक साहित्य प्रेमी और पुस्तक प्रेमी व्यक्ति थे। जेल में भी भगत सिंह पुस्तकें ही पढ़ते थे। एक क्रन्तिकारी और लेखक के तौर पर वे रूसी क्रांति के नेता लेनिन से बहुत प्रभावित थे। फाँसी होने के समय भगत सिंह लेनिन की ही किताब पढ़ रहे थे।

फांसी पर जाते समय भगत सिंह अपने साथियों सुखदेव और राजगुरू के साथ मस्ती से गा रहे थे, मेरा रंग दे बसन्ती चोला, मेरा रंग दे मेरा रंग दे बसन्ती चोला, माय रंग दे बसंती चोला...।

ऐतिहासिक दस्तावेजों में आज भी भगत सिंह द्वारा जेल से लिखे गए पत्र उपलब्ध हैं, जिनसे हमें भगत सिंह के विचारों की ऊर्जा का आभास होता है।

नारी तुम केवल श्रद्धा हो...

साक्षी श्रीवास्तव

समाज के एक पुरुष को शिक्षित किया जाता है तो केवल वह पुरुष ही शिक्षित होता है लेकिन यदि एक स्त्री को शिक्षित किया जाता है तो उस स्त्री के साथ साथ पूरा परिवार, पूरा समाज, पूरा राष्ट्र ही शिक्षित नहीं होता बल्कि उस राष्ट्र सहित समस्त संसार का भविष्य भी सुरक्षित और सुनिश्चित होता है। महिलाओं को 'आधी दुनिया' की संज्ञा दी जाती है। महिलाओं के बिना संसार की कल्पना भी नहीं की जा सकती है।

महिलाओं के योगदान को दृष्टिगत रखते हुए अंतर्राष्ट्रीय संस्था 'संयुक्त राष्ट्र' द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाने का निर्णय किया गया। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस की शुरुआत 8 मार्च सन् 1977 में की गयी। संयुक्त राष्ट्र द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाने का उद्देश्य महिलाओं को समाज में समानता का दर्जा दिलाने और पूरे विश्व को महिलाओं के महत्व के विषय में बताना था।

वर्तमान में महिला सशक्तिकरण विषय पर सर्वाधिक जोर दिया जा रहा है। महिला सशक्तिकरण का अर्थ महिलाओं को सशक्त करना है। सशक्तिकरण का मूल उद्देश्य अपनी भूमिका का सर्वश्रेष्ठ निर्वहन करते हुए हर क्षेत्र में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करना है। भारत की संस्कृति 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता' का अनुसरण करने वाली है।

प्राचीन भारत में स्त्रियों की दशा बहुत ही सम्मानजनक थी। ये एक प्रामाणिक तथ्य है कि सिन्धु घाटी सभ्यता में मातृसत्तात्मक परिवार व्यवस्था थी। प्राचीन भारत में स्त्रियों की शिक्षा दर भी बहुत अधिक थी। हिन्दू धर्मग्रंथों और वेद पुराण के अनुसार गार्गी, मैत्रेयी आदि स्त्रियों ने शास्त्रार्थ करके कई विद्वानों को पराजित किया था।

मध्यकालीन भारत में स्त्रियों की दशा दयनीय हो गयी। पर्दाप्रथा, सतीप्रथा, बालविवाह आदि कुप्रथाएं विकसित हुईं। स्त्रियों को घरों में ही कैद कर दिया गया। फलस्वरूप महिलाओं में शिक्षादर भी न्यूनतम हो गयी। इसके बाद अंग्रेजी शासन में कई ऐसे समाज सुधारक हुए जिन्होंने भारत में स्त्रियों की दशा में सुधार हेतु अथक परिश्रम किया और अंग्रेज सरकार को अपनी नीतियां बदलने पर मजबूर कर दिया। राजा राममोहन राय ने सतीप्रथा के उन्मूलन के लिए कार्य किया और इस कुप्रथा को समाज से दूर किया। ईश्वरचन्द्र विद्यासागर और ज्योतिबा फूले ने स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में बहुत कार्य किया।

समाज में जागरूकता लाने के लिए शिक्षा का प्रचार प्रसार बहुत आवश्यक है। शिक्षा का ही प्रतिफल है कि आज का भारत अपेक्षाकृत अधिक शिक्षित और जागरूक है। न केवल भारत बल्कि पूरे विश्व में आज शिक्षा, समाज सेवा, अभिनय, खेल, राजनीति हर क्षेत्र में अपना योगदान देकर महिलाएं देश के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वहन कर रहीं हैं।

रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून...

रजनीश पाण्डेय

जल ही जीवन है। पृथ्वी पर मौजूद सभी प्रकार के जन्तु एवं वनस्पति के लिए पानी बुनियादी जरूरत है। दुनिया का अस्तित्व जल ही सुनिश्चित करता है। जल के बिना हमारा जीवन विलुप्त हो जाएगा। इसलिए यथासंभव जल का संरक्षण करना चाहिए।

जल संरक्षण के प्रति जन जागृति के लिए हर वर्ष 22 मार्च को पूरे विश्व में जल दिवस के रूप में मनाया जाता है। सन् 1993 में संयुक्त राष्ट्र की सामान्य सभा द्वारा इसे मनाने का निर्णय लिया गया। इस दिवस का उद्देश्य लोगों को जल के महत्व, आवश्यकता व संरक्षण के बारे में जानकारी देकर जागरूक करना है। इसे सर्वप्रथम 1992 में ब्राजील के रियो डी जेनेरियो में 'पर्यावरण और विकास पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन' की अनुसूची 21 में आधिकारिक रूप से जोड़ा गया था। यह कार्यक्रम वैश्विक जल संरक्षण के वास्तविक क्रिया–कलापों को प्रोत्साहन देने के लिए सदस्य राष्ट्रों सहित संयुक्त राष्ट्र द्वारा आयोजित किया जाता है।

जल दिवस को बढ़ावा देने के लिए प्रतिवर्ष संयुक्त राष्ट्र की एक अलग इकाई को चयनित किया जाता है जो लोगों को जल मुद्दों के बारे में सुनने व समझने के लिए प्रोत्साहित करती है। साथ ही अंतर्राष्ट्रीय गतिविधियों का आयोजन भी करती है। हर वर्ष विश्व जल दिवस की एक थीम निर्धारित की जाती है। इस वर्ष 2020 में यह थीम 'जलवायु परिवर्तन का प्रभाव' है। विश्व जल दिवस के अवसर पर सम्मेलन आयोजित किया जाता है और जल सुरक्षा, जल प्रदूषण, जल संरक्षण तथा जल के उचित प्रयोग करने संबंधी कई विषयों पर चर्चा की जाती है। परंतु इस बार 2020 में कोरोना वायरस के संक्रमण के कारण कोई आयोजन न करके संस्थानों ने इससे संबंधित कार्यक्रमों को या तो रद्दकर दिया या फिर आगे बढ़ा दिया है।

आज हम जल का इस प्रकार दुरुपयोग कर रहे है जिससे आने वाले कुछ वर्षों में सभी जगह पानी की किल्लत हो जाएगी। हमारी आगे आने वाली पीढ़ी को जल नहीं मिलेगा तो आप सोच सकते हैं कि आने वाले वर्षों में जल के बिना स्थिति कितनी भयावह होगी। आज मानव द्वारा जो जल पीने लायक है उसे भी प्रदूषित किया जा रहा है। नदियों, नहरों, तालाबों में नालों का पानी छोड़ दिया जा रहा है जिसके कारण शुद्ध जल भी प्रदूषित हो रहा है और इसके कारण कई बीमारियां फैल रही है।

हमें जल का जरूरी व उचित उपयोग ही करना चाहिए। जल की एक भी बूंद को व्यर्थ नहीं करना चाहिए। साथ ही हमें जल को प्रदूषित होने से बचाने के लिए भी प्रयास करना चाहिए ताकि जल को अपनी आने वाली पीढ़ियों के लिए बचाया जा सके।

सुविचार

मौन सबसे सशक्त भाषण है। धीरे–धीरे दुनिया आपको सुनेगी।

–महात्मा गाँधी

आप सुधी पाठकों के विचार सादर आमंत्रित हैं।

avadhabhivyakti@gmail.com

जन–अभिव्यक्ति

ई–मासिक पत्रिका अभिव्यक्ति विश्वविद्यालय परिसर के क्रियाकलापों का सारगर्भित विवरण प्रस्तुत करती है। संत गाडगे और रेडियो दिवस पर लेख बहुत ही ज्ञानवर्द्धक रहें।

–कमल शर्मा

प्रमुख संरक्षक
प्रो0 मनोज दीक्षित, कुलपति
संरक्षक
डॉ0 विजयेन्दु चतुर्वेदी, समन्वयक
प्रकाशक
रामचन्द्र अवस्थी, कुलसचिव
सम्पादक मण्डल
डॉ0 राजेश सिंह कुशवाहा
डॉ0 अनिल कुमार विश्वा
डॉ0 राज नारायण पाण्डेय
संकलन एवं सम्पादन
सौरभ, शिवाकर, सिद्धांत,
साक्षी, रजनीश

Feedback

avadhabhivyakti@gmail.com

डिस्क्लेमर : ई–पत्रिका का प्रकाशन पूरी तरह से शैक्षणिक विकास को समर्पित है, इसका कोई भी व्यावसायिक हित नहीं है। सर्वाधिकार @ डॉ0 राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या।

पुस्तकालय के वेबपेज का लोकार्पण

28 फरवरी। राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के अवसर पर कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित ने अवध विश्वविद्यालय के वेबसाइट से लिंक्ड पुस्तकालय के वेबपेज का लोकार्पण किया। पुस्तकालय के नवनियुक्त प्रभारी प्रो0 के0 के0 वर्मा ने बताया कि विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर क्लिक करने से पुस्तकालय का वेबपेज खुल जायेगा। इसमें अलग–अलग आप्सन के विकल्प है जिसमें अबाउट लाइब्रेरी, सर्विसेज, कलेक्शन्स लिंक हैं। अबाउट लाइब्रेरी में 6 लिंक जैसे लाइब्रेरी हिस्ट्री, मिशन, स्टाफ, रूल्स, बुक्स एंड जर्नल्स और एन्टी प्लेगरिज्म के संबंध में जानकारियां दी गयी हैं। ऑनलाइन सर्विसेज में ई–शोध सिन्धु एवं शोध गंगा का लिंक है। साइबर लाइब्रेरी में कानून से संबंधित ई–बुक सेक्शन में विश्वविद्यालय द्वारा क्रय किये गए बिबलियोटेक्स, वर्ल्ड टेक्नोलॉजी रिफरेन्स ई–बुक लिंक सहित अन्य कई लिंक उपलब्ध हैं। इसी क्रम में जर्नल्स सेक्शन में टेलर एंड फ्रांसिस ई जर्नल्स का लिंक है। इसे विश्वविद्यालय द्वारा क्रय किया गया है। ई–बुक्स और ई–जर्नल्स से शोध को नई दिशा मिलेगी। प्रो0 वर्मा ने बताया कि डिजिटल लाइब्रेरी में नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी का लिंक दिया गया है। ओपन ई–सोर्स में ई–पीजी पाठशाला, प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग इत्यादि का लिंक दिया गया है। कले. क्शन लिंक के अंतर्गत डेली ई–न्यूज पेपर, आर्ट गैलरी, विश्वविद्यालय की पत्रिका का लिंक उपलब्ध है।

इस अवसर पर प्रतिकुलपति प्रो0 एस0 एन0 शुक्ल, मुख्य नियंता प्रो0 आर0 एन0 राय, लाइब्रेरियन डॉ0 आर0 के0 सिंह, लाइब्रेरी डिजिटलीकरण प्रभारी डॉ0 नरेश कुमार चौधरी, डॉ0 शैलेन्द्र वर्मा, डॉ0 शैलेन्द्र कुमार, रवि मालवीय सहित अन्य उपस्थित रहे।

राम नैतिकता के शिरोमणि रहे हैं: डॉ0 विश्वास

04 मार्च। संस्कार भारती, डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्व–विद्यालय, ललित कला अकादमी एवं अयोध्या शोध संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में अपने–अपने राम विषय पर एकेडमी सत्र का आयोजन किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए प्रख्यात कवि डॉ0 कुमार विश्वास ने कहा कि अयोध्या ने पूरी दुनिया को दिशा दी है।

डॉ0 विश्वास ने अभिज्ञान शाकुन्तलम का उद्धरण देते हुए बताया कि भारत दुनिया का सबसे पुराना लोकतंत्र है, यह हमारी भूल है कि लोकतंत्र की अवधारणा बाहर से आयी है। हम जिनका अनुकरण नहीं करना चाहते उनकी कमियां तलाशते हैं। राम मनुष्यता के सागर हैं। मनुष्यता का सबसे बड़ा सपना राम हैं। डॉ0 विश्वास ने अपने पाठ में 'मानवता की खुली आंख के सबसे सुन्दर सपने राम। दुनियां भर ने देखे अपने–अपने राम...' को सुनाया।

डॉ0 विश्वास ने कहा कि राम लक्ष्य है, मार्ग नहीं, राम नैतिकता के शिरोमणि रहे हैं। लेकिन इसे नैतिक शिक्षा में नहीं बताया गया। राम हमारी अवतारों की परम्परा से आये हैं। जिस दिन हिंसा की कुल्हाड़ी हाथ से छूट जायेगी उसी दिन परशुराम से राम बन जायेगा। राम लोक की उत्पत्ति हैं। राम ने हरिश्चन्द्र से सत्य निष्ठा सीखी है।

डॉ0 विश्वास ने बताया कि ऋषियों के ज्ञान से चेतना प्राप्त होती है। राम ने मनुष्य के मर्यादा का नियमन किया है। राम राजा बने तो अपने संस्कारों से बने और अपने पराक्रम को सिद्ध किया। उन्होंने कहा कि राम कहते हैं कि राजा को ऐसा कोई कार्य नहीं करना चाहिए जिससे प्रजा का मन मलिन हो। राजा बनना आसान है नायक बनना उतना ही कठिन है। लोगों में आत्म विश्वास राम हैं। दीये से दीया जलाने का कार्य भारतीय संस्कृति ने दिया है। राम दृष्टि है राम की विजय निजता का उत्सव नहीं है, यह समूह का उत्सव है।

डॉ0 विश्वास ने कहा कि देश का संस्कार ही देश बनाता है। संघर्ष सीखना हो तो राम के जीवन से सीखें। इसीलिए मैं कहता हूं कि राम नायक हैं। अयोध्या सात्विकता का प्रतीक है और लंका भौतिकता का है।

लेहले जनम रघुरईया हो रामा..

04 मार्च। 'लोक में राम' कॉन्क्लेव के अन्तर्गत 'लोक संस्कृति में राम' विषय पर आयोजित एकेडमी सत्र की अध्यक्षता करते हुए डॉ0 यतीन्द्र मोहन मिश्र ने कहा कि राम भक्त परम्परा के वाहक माने जाते हैं और इन्हीं परम्पराओं का अनुशीलन अयोध्या में होता रहा है। तीन सौ से ज्यादा राम की लोक कथाएं भारतीय संस्कृति में विद्यमान है।

डॉ0 विद्या बिन्दु सिंह ने कहा कि लोक गीतों में जो राम कथा आई है वे सदियों से लोक साहित्य में हैं। मानवीय संवेदनाओं के साथ गाये जाने वाले गीतों को गाया जाता है और यह जब तक गाया जायेगा, तबतक भारतीय संस्कृति जीवित रहेगी।

गोवा की पूर्व राज्यपाल श्रीमती मृदुला सिन्हा ने कहा कि मिथिला और अवध के भावनात्मक रिश्ते हैं। मिथिलांचल में सीता जीवंत हैं। सीता के कारण ही राम मर्यादा पुरुषोत्तम हुए। सीता राम की प्रेरणा स्रोत मानी जाती हैं। सीता के कारण राम के प्रति सहानुभूति होती है।

कार्यक्रम की संयोजिका श्रीमती मालिनी अवस्थी ने लोक गीतों में राम के व्यापक चरित्र को केवट प्रसंग, सबरी और अहिल्या के उद्धरणों से स्पष्ट किया। आज की पीढ़ी का युवा भी राम को देखता है। कबीर के राम लोक गीतों के राम है। लोकगीत की प्रस्तुति करते हुए मालिनी अवस्थी ने 'लेहले जनम रघुरईया हो रामा...' गाकर बताया कि राम का नाम सोहर से लेकर अंतिम समय तक समाहित है। सीता आधुनिक समाज की प्रणेता हैं।

डॉ0 रानी झा ने मधुबनी संस्कृति कला के चित्रण पर राम और सीता को लोक जीवन के आदर्शों में उकेरा। सीता के हृदय में करूणा अधिक है। सीता धरती मां हैं तो राम परम ब्रह्म। पूरे भूमंडल में सीता राम के अतिरिक्त कुछ नहीं बचता। रसोई घर से खेत तक राम है। राम हमारे पालक हैं सीता एक सम्बल। सीता संकल्प का आधार हैं। कार्यक्रम का संचालन अमित पाण्डेय एवं राहुल चौधरी ने किया।

शीघ्र ही अयोध्या विश्व की सांस्कृतिक एवं आर्थिक राजधानी बनेगी: सतीश कुमार

16 फरवरी। संत कबीर सभागार में स्वदेशी जागरण मंच एवं समाज कार्य विभाग के संयुक्त तत्वावधान में दत्तोपंत ठेंगड़ी की जन्म शताब्दी समारोह का आयोजन किया गया।

समारोह को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि स्वदेशी जागरण मंच के अखिल भारतीय विचार विभाग प्रमुख सतीश कुमार ने बताया कि बीसवीं शताब्दी में चार ऋषि आजादी के पहले, दो महात्मा गांधी एवं बाल गंगाधर तथा दो आजादी के बाद पंडित दीनदयाल उपाध्याय एवं श्री दत्तोपंत ठेंगड़ी ने आधुनिक भारत को स्वदेशी का वैचारिक आधार प्रदान किया। उन्होंने बताया कि लगभग दो दशक पूर्व एशिया के सबसे बड़े पानीपत के कम्बल मार्केट पर चीन ने कब्जा कर रखा था। स्वदेशी जागरण मंच के आंदोलन के कारण 142 कंपनियां पानीपत में पुनः प्रारंभ हुई हैं और वे अब चीन के बीजिंग में भी पानीपत के कम्बल निर्यात कर रही हैं। उन्होंने कहा कि लंका विजय के बाद भगवान श्रीराम ने जननी और जन्मभूमि का जिस प्रकार महिमामंडन किया उस कारण से स्वयं भगवान श्रीराम स्वदेशी के प्रथम विचारक के रूप में स्थापित हैं। जिस प्रकार समय करवट बदल रहा है, उससे लगता है कि शीघ्र ही अयोध्या विश्व की सांस्कृतिक एवं आर्थिक राजधानी बनेगी और भारत के विश्व गुरु होने का सपना पूर्ण होगा।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे प्रो0 राम नयन राय ने कहा कि हमें भारत के समग्र एवं समन्वित विकास हेतु संपूर्ण गुणवत्ता प्रबंधन पर कार्य करना होगा। हम अपनी स्वदेशी क्षमता को विकसित कर भारत को अंतर्राष्ट्रीय बाजार मानकों पर स्थापित करके भारत को दुनिया का आर्थिक संप्रभुता संपन्न राष्ट्र बना सकते हैं। कार्यक्रम में उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखंड के क्षेत्र संयोजक राजीव कुमार, क्षेत्र विचार प्रमुख अजय कुमार, विश्वविद्यालय कार्यपरिषद सदस्य सरल ज्ञाप्रटे एवं भारतीय मजदूर संघ के जिला अध्यक्ष सत्य प्रकाश श्रीवा. स्तव ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन रवि तिवारी ने किया। समाज कार्य विभाग के समन्वयक डॉ0 विनय मिश्रा ने अतिथियों का स्वागत किया।

रामकथा को कैनवास पर चित्रकारों ने किया जीवंत

05 मार्च। श्रीराम शोध–पीठ में अवध विश्वविद्यालय, राष्ट्रीय ललित कला अकादमी, संस्कार भारती एवं नैमि–षारण्य फाउंडेशन के संयुक्त तत्वा–वधान में 'लोक में राम' विषय पर 01–05 मार्च 2020 तक राष्ट्रीय चित्रण कार्यशाला का आयोजन किया गया।

कार्यशाला में चित्रित कलाकृतियों की प्रदर्शनी का आयोजन स्वामी विवेकानन्द प्रेक्षागृह में किया गया। प्रदर्शनी का लोकार्पण गोवा की पूर्व राज्यपाल मृदुला सिन्हा, संस्कार भारती के संस्थापक पद्मश्री बाबा योगेन्द्र तथा कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित ने किया। प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए गोवा की राज्यपाल ने कहा की अवध विश्वविद्यालय एवं ललित कला संस्थान द्वारा आयोजित प्रदर्शनी में आए कलाकारों ने श्रीराम जी के जीवन वृतांत पर आधारित विभिन्न कथाओं को कैनवास पर जीवंत रूप में मार्मिक भावों के साथ व्यक्त किया है, जो सराहनीय है। संस्कार भारती के संस्थापक पद्मश्री बाबा योगेन्द्र ने कला प्रदर्शनी के लोकार्पण के अवसर पर कलाकारों एवं छात्र–छात्राओं को आर्शीवाद देते हुये उज्जवल भविष्य की कामना की। कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित ने प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए कहा कि "लोक में राम" विषयक चित्रण की विभिन्न विधाओं को कैनवास पर उकेरकर कलाकारों ने जीवंत अवलोकन प्रस्तुत किया है। इस अवसर पर प्रति कुलपति प्रो0 एस0 एन0 शुक्ला, संकायाध्यक्ष प्रो0 एन0 के0 तिवारी, प्रो0 हिमांशु शेखर सिंह, प्रो0 विनोद कुमार श्रीवास्तव, पल्लवी सोनी, डॉ0 सरिता द्विवेदी, रीमा सिंह एवं सरिता सिंह, डॉ0 प्रदीप कुमार त्रिपाठी, डॉ0 अलका श्रीवास्तव अन्य शिक्षकों सहित बड़ी संख्या में कर्मचारी एवं विद्यार्थियों की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

रामकथा में सबसे महत्वपूर्ण घटनाक्रम वनगमन है: कोहली

05 मार्च। "लोक में राम" विषय पर आयोजित कॉन्क्लेव के दूसरे दिन भी एकेडमी सत्रों का आयोजन किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए साहित्यकार श्रीराम परिहार ने कहा कि एक शाश्वत परम्परा को लोक परम्पराओं ने संभाल कर रखा है। अंग्रेजो और मुगलों की गुलामी के बाद भी भारत अभी भी बचा है। अब भविष्य के निर्माण की सामग्री को बचा कर रखना होगा। उन्होंने कहा कि हल्दी घाटी की लड़ाई में लोक खड़ा है। संस्कृति की असली रक्षक माताएं व बहनें है। लोक सारी विद्याएं प्रदान करता है। परिहार ने कहा कि खेती और संस्कृति दोनों में राम बसते हैं। हम राजनीतिक रूप से गुलाम रहें लेकिन हमारी लोक परम्पराओं ने हमें बचाए रखा है। जन्म से मृत्यु के गीतों में भी उत्सव मनाया जाता है। उसमें भी राम बसते हैं। उठते राम, चलते राम भारतीय लोक के राम आत्मा में बसते हैं। भगवान राम संघर्ष के समय आत्मीय सम्बल प्रदान करते हैं। उन्होंने कहा कि मन क्रम वचन की संस्कृति हमें राम से मिली है।

वरिष्ठ साहित्यकार एवं चिन्तक नरेन्द्र कोहली ने कहा कि राम कथा में सबसे महत्वपूर्ण घटनाक्रम वनगमन है। सारी अयोध्या उनके पीछे जा रही है। वनगमन से रोकने के लिए। एक भी ऋषि ने राम को रोकने के लिए कोशिश नहीं की ताकि वनगमन राम न करें। ऋषि बुद्धिजीवी कहे जाते हैं। ऋषियों ने ही राम के चरित्र को लोक का राम बनाया। विश्वामित्र ने राम को प्रजा का शासन सिखाया, राजा को प्रजा के पास जाना चाहिए। कोहली ने कहा कि राजा अपने राज्य की रक्षा करता है, ऋषि सम्पूर्ण राष्ट्र की चिन्ता करता है। यज्ञ का तात्पर्य हवन से नहीं है, यज्ञ के पीछे संकल्प होता है। यह आप भी देखें कि आपके राष्ट्र को कौन खण्डित कर रहा है। राम की आध्यात्मिक व शारीरिक शक्ति की परीक्षा धनुष भंग है। उन्होंने कहा कि बुद्धिजीवियों को यदि समाज से हटा दिया जाए तो समाज का कल्याण नहीं हो सकता। राम का संकल्प था, पूरी पृथ्वी को राक्षसों से हीन करना। राम का यह आश्वासन समाज के प्रति प्रतिबद्धता का परिचायक है। उन्होंने कहा कि राम रावण युद्ध तो वानरों का था राम ने सिर्फ नेतृत्व किया था। राम के नेतृत्व की यह क्षमता थी कि उन्होंने एक प्रभुतासम्पन्न राज्य से युद्ध किया। राष्ट्र के एकीकरण का कार्य भी राम ने किया।

सत्र को संबोधित करती हुई गोवा की पूर्व राज्यपाल श्रीमती मृदुला सिन्हा ने कहा कि रामकथा बार–बार सुनी जाती है। लोक शास्त्र भी राम कथा है। वाल्मीकि एवं तुलसीकृत रामायण की वजह से राम को नजदीक रख पाये हैं। शास्त्र एवं लोक दोनों के नायक राम हैं। उन्होंने कहा कि बुद्धिजीवियों का नरसंहार प्रथम मानसिक क्षति और बाद में शारीरिक क्षति होती है।

राम सीता के, सीता राम के विषय पर आयोजित द्वितीय एकेडमी सत्र की अध्यक्षता करते हुए मालिनी अवस्थी ने कहा कि लोक संस्कृति में राम अकेले नहीं हैं, सीता संयुक्त है। लोक संस्कृतियों ने राम को संवारा है। भारतीय लोक मानस में सीता स्थापित हैं। सीता का संघर्ष लोक मान्यताओं को गढ़ता है। सीता का चरित्र महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने का संदेश देता है। सीता का सौभाग्य बेटियों से जोड़ा गया है। सीता को अखंड सौभाग्यवती होने का वरदान मिला है। लोक में सीता का स्थान सर्वश्रेष्ठ है, सभी प्रतीक सीता और राम के हैं। परिवार की छवि भी सीता और राम की है।

गोवा की पूर्व राज्यपाल श्रीमती मृदुला सिन्हा ने कहा कि सीता और राम को कर्तव्य पालन के लिए जाना जाता है। भारतीय संस्कृति में दाम्पत्य जीवन एक वचन है। एक रिश्ता है जो दलहन के एक दाने के छिलका जैसा है। लोकमन के राम और सीता भारत के कण–कण में बसते हैं। सीता में राम हैं या राम में सीता यह दोनों एक समान हैं।

डॉ0 स्वर्ण अनिल ने कहा कि विश्व के राम सीता एक आदर्श युगल नायक हैं। भारत के विभिन्न हिस्सों में रामायण की अलग–अलग कहानियां हैं। मिजोरम के देव पर्वत पर राम कथा चित्रों में अंकित है। पूर्वोत्तर क्षेत्र में कर्वी की लोककथा के जनक एक राजा के साथ एक किसान हैं। सीता को एक किसान की बेटी के रूप में मान्यता दी गई है।

श्रीमती शुभ्रास्था ने कहा कि भारतीय लोक संस्कृति की शुरूआत राम गीतों से होती है। राम सीता से ही भारतीय मानस का चरित्र निर्माण हुआ है। शगुन के गीतों में भी राम सीता पाये जाते हैं। सीता राम का चिन्ह छठ के गीतों में भी स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है।

डॉ0 विद्या बिन्दु सिंह ने कहा कि सीता का चरित्र भारतीय जनमानस के लिए सर्वोत्तम शिखर माना जाता है। जो सहता है वह कमजोर नहीं होता, सीता इसका सर्वश्रेष्ठ उदाहरण हैं।

डॉ0 रानी झा ने कहा कि मिथिला के लिए सीता एक संस्कार हैं और यह सीता के जन्म से चला आ रहा है। सीता की दृढ़ता शक्ति का परिचायक है जो लक्ष्मण रेखा पार करने की क्षमता रखती है। मिथिला शक्ति की उपासक स्थली है। सीता का स्वाभिमान आदर्श चरित्र के रूप में समाज में स्थापित है।

•पुरातन छात्र सभा द्वारा अवध विश्वविद्यालय के 45वें स्थापना दिवस के अवसर पर परिसर में 05 मार्च, 2020 को स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया।

•विश्वविद्यालय परिसर के प्रबंधन एवं उद्यमिता विभाग में दिनांक 06 मार्च, 2020 को एक्सिस बैंक द्वारा आयोजित प्लेसमेंट में चार विद्यार्थी चयनित।

•यौगिक विज्ञान संस्थान में 25 फरवरी, 2020 को अष्टांग योग के यम–नियम पर आधारित शांति व स्वास्थ्य का महत्व विषयक संगोष्ठी आयोजित की गई।

•समाज कार्य विभाग के समन्वयक डॉ0 विनय कुमार मिश्र को उत्तर प्रदेश शासन द्वारा अयोध्या मंडल के राष्ट्रीय सेवा योजना की गतिविधियों की देख रेख के लिए नोडल अधिकारी बनाया गया।

यक्षगान, छाऊ, पुंग चोलम व तलवार बाजी ने मंत्रमुग्ध कर दिया

05 मार्च। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के प्रागंड़ में अवध विश्वविद्यालय, संस्कार भारती, ललित कला अकादमी, नई दिल्ली एवं अयोध्या शोध संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में 04–05 मार्च, 2020 को सांस्कृतिक संध्या का आयोजन किया गया।

सांस्कृतिक संध्या में मणिपुर के श्याम सिंह व उनके कलाकारों द्वारा धांगत शैली में परम्परागत युद्ध तलवार बाजी की रोचक प्रस्तुति ने दर्शकों को अचंभित कर दिया। कार्यक्रम में राजस्थान मेवात के युसुफ खान के साथियों ने जोगियों के गायन पर वाद्ययंत्रों से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। वहीं कर्नाटक के कृष्णमूर्ति एवं उनके कला–कारों द्वारा यक्षगान पर आकर्षक प्रस्तुति ने श्रोताओं का मन मोह लिया। कार्यक्रम की संयोजिका मालिनी अवस्थी ने बच्चे के जन्म पर बधाई गीत गाकर जनसमूह को भाव–विभोर कर दिया।

05 मार्च को सांस्कृतिक संध्या में बंगलुरू से आए

कलाकारों ने अनुपमा के निर्देशन में कठपुतली की रामलीला का प्रदर्शन कर दर्शकों को स्तब्ध कर दिया । कार्यक्रम में श्याम सिंह के नेतृत्व में उनके साथियों ने पुंग चोलम की प्रस्तुति देकर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। वहीं पुरुलिया से आई दिलीप महतो की टीम ने छाऊ के तहत सीता स्वयंवर की आकर्षक प्रस्तुति दी। संजू बघेल के आल्हा से सभी दर्शक भाव विभोर हो गए।

सांस्कृतिक कार्यक्रम के अंत में गोवा की पूर्व राज्यपाल डॉ0 मृदुला सिन्हा, कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित एवं कार्यक्रम की संयोजिका मालिनी अवस्थी द्वारा कलाकारों को सम्मानित किया गया। सांस्कृतिक संध्या का संचालन संस्कार भारती के राहुल चौधरी द्वारा किया गया।

इस अवसर पर श्रीमती आरती दीक्षित, प्रति कुलपति प्रो0 एस0 एन0 शुक्ल, कार्यपरिषद सदस्य सरल ज्ञापटे, ओम प्रकाश सिंह, डॉ0 दिलीप सिंह, डॉ0 आर0एन0राय, प्रो0 अशोक शुक्ल, प्रो0 के0 के0 वर्मा, प्रो0 हिमांशु शेखर सिंह सहित अन्य शिक्षक, कर्मचारी, संस्कार भारती, ललित कला अकादमी, नई दिल्ली एवं अयोध्या शोध संस्थान के पदाधिकारी उपस्थित रहे।

अहिंसा सद्भावना सम्मान से कुलपति प्रो0 दीक्षित सम्मानित

26 फरवरी। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 मनोज दीक्षित को गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति, नई दिल्ली, शहजाद राय शोध संस्थान, बड़ौत एवं पारस धाम, मुंबई के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित समारोह में "अहिंसा सद्भावना सम्मान अलंकरण 2020" से सम्मानित किया गया। प्रो0 दीक्षित को गांधी दर्शन व स्मृति दर्शन के निदेशक दीपांकर श्रीज्ञान व राष्ट्र संत नम्र मुनि जी महाराज द्वारा पुरस्कार के रूप में चरखा व प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। इस उपलब्धि पर शिक्षकों एवं कर्मचारियों ने हर्ष व्यक्त किया है।

आईईटी के पांच छात्रों का चयन

22 फरवरी। आई0ई0टी0 संस्थान में एस0डी0जी0 प्राइवेट लिमिटेड कम्पनी, नोएडा द्वारा आयोजित प्लेसमेंट में कम्प्यूटर साइंस इंजीनियरिंग विभाग के पांच छात्रों का चयन पांच से छह लाख तक के पैकेज पर किया गया।

आउटरीच कैंप का आयोजन

25 फरवरी। अवध विश्वविद्यालय के समाज कार्य विभाग एवं सिफ्सा के संयुक्त तत्वाधान में यूथ काउंसलिंग सेंटर द्वारा 25 फरवरी से 02 मार्च 2020 तक आंगनबाड़ी केंद्र डाभासेमर तथा गोपालपुर गांव में आउटरीच कैंप आयोजित किया गया। कैंप में ग्रामीण महिलाओं को कुपोषण, पौष्टिक आहार, स्वच्छता एवं परिवार नियोजन के प्रति जागरूक किया गया।

योग प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

18 फरवरी। विश्वविद्यालय के यौगिक विज्ञान संस्थान में राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के तहत कम्युनिटी हेल्थ ऑफिसर्स के योग प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। एन0एच0एम0 की एडिशनल डायरेक्टर जसमीत कौर ने कहा कि एन0एच0एम0 द्वारा स्थापित केन्द्रों पर दवाओं के माध्यम से चिकित्सा के स्थान पर यथासंभव योग व यौगिक अभ्यासों का प्रयोग किये जाने की संकल्पना इस अभियान द्वारा साकार होने जा रही है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे प्रति कुलपति प्रो. एस0 एन0 शुक्ल ने कहा कि सामाजिक सरोकार के लिए विश्वविद्यालय एनएचएम के साथ मिलकर कार्य करता रहेगा। एन0एच0एम0 के जनरल मैनेजर डॉ. राजेश झा ने योग कार्यक्रम से सम्बन्धित एन0एच0एम0 की भावी योजनाओं पर प्रकाश डाला। यौगिक विज्ञान संस्थान के समन्वयक प्रो. संत शरण मिश्र ने कहा कि दो बड़ी संस्थाओं एनएचएम उत्तर प्रदेश तथा अवध विश्वविद्यालय के साथ कार्य करने की सहमति सामाजिक उत्थान के लिए उल्लेखनीय कदम है।

तकनीक को सरल एवं सहज रूप में प्रस्तुत किया जाना चाहिएः गोयनका

28 फरवरी। प्रौद्योगिकी एवं तकनीकी संस्थान में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के अवसर पर अन्त–र्राष्ट्रीय संगोष्ठी 'स्मार्ट इनोवेशन इन कम्यूनिकेशन एण्ड कम्प्यूटेशनल साइंस' का 27–28 फरवरी तक आयोजन किया गया। संगोष्ठी को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि सदस्य किस रेलवे बोर्ड के विनीत गोयनका ने कहा कि शोध, सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः... के सिद्धान्त पर होना चाहिए। उन्होंने कहा कि शोध तकनीक को सदैव सरल एवं सहज रूप में प्रस्तुत किया जाना चाहिए।

गोयनका ने शोध छात्रों का आवाहन करते हुए कहा कि हमेशा समस्या का समाधान ढूढ़ने की कोशिश करनी चाहिए। आज देश की जनसंख्या 130 करोड़ है, देश में 750 विश्वविद्यालय भी हैं परन्तु कोई भी मोबाइल टेक्नोलॉजी, टेलीविजन टेक्नोलॉजी, मेड इन इण्डिया नहीं है। भारत को लगभग 7 करोड़ टेलीविजन प्रतिवर्ष खरीदना पड़ता है। इसका पैसा देश के बाहर की कम्पनियों के पास जा रहा है। दुखद है कि आज इलेक्ट्रॉनिक्स गैजेट जैसे टेलीविजन, मोबाइल के आयात का खर्च पेट्रोलियम खर्च से कहीं ज्यादा है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित ने कहा कि शोधार्थियों को रटने की पद्धति छोड़कर उसके सैद्धान्तिक स्वरूप को समझने की जरूरत है। भारत युवाओं का देश है यहां गुणों की कमी नहीं है। बल्कि उसको प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है तभी सकारात्मक परिणाम तकनीक के क्षेत्र में मिलेगें। प्रो0 दीक्षित ने कहा कि उपयोगिता ही आवश्यकता को जन्म देती है। अतः प्रत्येक शोधार्थी को अपनी उपयोगिता बढ़ानी चाहिए ताकि कुछ रिटर्न देश को दे सके।

विशिष्ट अतिथि के रूप में विज्ञान भारती के पूर्व आचार्य सोमदेव भारद्वाज ने बताया कि भारत में कम्प्यूटर का प्रयोग 1980 में शुरू किया गया उस समय कम्प्यूटर का प्रयोग एवं खर्च दोनो ही महँगा होता था। कम्प्यूटर का पूरा भाग विदेश से आयात होता था।

डॉ0 विजय भटकर ने 1988 में सुपर कम्प्यूटर निर्माण हेतु सोचा एवं 1990 में पहला भारतीय सुपर कम्प्यूटर का निर्माण किया और इसका प्रदर्शन स्विटजरलैंण्ड के राजधानी ज्यूरिक में आयोजित कम्प्यूटर सम्मेलन में किया गया। इसका विश्व के सभी वैज्ञानिको ने लोहा माना। सत्र को संबोधित करते हुए मुख्य वक्ता कैंसर रिसर्च इंस्टीटयूट ग्वालियर के डॉ0 मुनेश चन्द्र त्रिवेदी ने कम्प्यूटेशनल सांइस का प्रयोग एवं आवश्यकता पर विस्तार पूर्वक चर्चा की। प्रथम दिन के तीन सत्र में कुल दस शोध पत्र प्रस्तुत किए गए, इसमें चार शोध–पत्र स्काइप तकनीक के मदद से बुल्गारिया एवं बीजिंग के शोध छात्रों ने प्रस्तुत किया।

संगोष्ठी के दूसरे दिन तकनीकी सत्र की अध्यक्षता करते हुए आई0टी0 लखनऊ के उपाचार्य डॉ0 उपेंद्र ने कहा कि तकनीक और उसके एप्लीकेशन में व्यापक बदलाव की वजह से स्मार्ट कहा जाने लगा। पहले कई शोध व्यवहारिक पक्षों में किए जाते थे, उसी विषय पर कई अलग अलग शोधार्थियों द्वारा शोध किया जाता था। वर्तमान परिवेश में विषय आधारित पेटेंट कराने के उपरांत शोधार्थियों के काम को पूरे विश्व में सराहना मिलती है।

आई0बी0एम0 चेक रिपब्लिक के मुख्य प्रोग्रामर डॉ0 शुभम सिंह ने बताया कि आज इंडस्ट्री में शोध की अपार सम्भावनाएं हैं। आर्टिफिसियल इंटेलिजेंस, डीप लर्निंग एवं मशीन लर्निंग जैसे विषयों की प्रांसगिकता के कई मायने हैं। अमेठी के राजर्षि इंजीनियरिंग कॉलेज के डॉ0 अनुराग सिंह ने बताया कि आज नए–नए आयाम इंजीनियरिंग के क्षेत्र से जुड़ रहे हैं। इन क्षेत्रों में बहुआयामी प्रतिभा से शोध छात्रों के लिए नये–नये द्वार खुल रहे हैं।

संस्थान के निदेशक प्रो0 रमापति मिश्र ने कहा कि सोलर एनर्जी के क्षेत्र में शोध की अपार सम्भावना है। आज सोलर एनर्जी का केवल 30 प्रतिशत ही प्रयोग में लाया जा रहा है। आज लोग फियर साइकोलॉजी से ग्रसित हैं और इस बीमारी में उन्हें हमेशा महसूस होता है कि उनके मोबाइल की घंटी बज रही है। इससे शीघ्र निदान पाने की आवश्यकता है।

अतिथियों का स्वागत रमेश मिश्र एवं परिमल तिवारी ने किया। कार्यक्रम का संचालन अमितेश पंडित एवं आस्था कुशवाहा ने किया। धन्यवाद ज्ञापन कार्यक्रम संयोजक विनीत कुमार सिंह द्वारा किया गया।

क्रिकेट में कुलपति ब्रिगेड व वॉलीबाल में कुलसचिव ब्रिगेड ने बाजी मारी

19 फरवरी। विश्वविद्यालय के नवीन परिसर में स्थित खेल मैदान में अंतर्विभागीय वार्षिक खेल प्रतियोगिता के अंतर्गत आयोजित क्रिकेट मैच में कुलपति ब्रिगेड ने कुलसचिव ब्रिगेड पर 01 विकेट से रोमांचक जीत दर्ज की।

मैच में पहले खेलते हुए कुलसचिव ब्रिगेड 12वें ओवर में 68 रनों पर ही सिमट गयी। जवाब में कुलपति ब्रिगेड ने शानदार खेल का प्रदर्शन करते हुए 12वें ओवर में 9 विकेट खोकर 69 रनों के लक्ष्य को प्राप्त कर लिया। कुलपति ब्रिगेड की ओर से कोच रहे प्रो0 अशोक शुक्ला और टीम मैनेजर डॉ0 शैलेंद्र कुमार वर्मा तथा कुलसचिव ब्रिगेड के कोच गणेश शंकर श्रीवास्तव और टीम मैनेजर कौशल किशोर मिश्र ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। निर्णायकों में आदेश श्रीवास्तव, अविनाश यादव और प्रदीप पाल रहे।

क्रीड़ा प्रभारी आवासीय परिसर डॉ0 मुकेश कुमार वर्मा ने बताया कि क्रिकेट मैच के समाप्त होने के साथ आवासीय परिसर के अंतर विभागीय खेल का समापन हो गया है। शीघ्र ही सभी विजेता और उपविजेता टीमों को पुरस्कृत किया जाएगा। इसकी सूचना सभी विभागों को उपलब्ध करा दी जाएगी।

प्रतियोगिता का शुभारम्भ मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति प्रो0 एस0 एन0 शुक्ल एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में मुख्य नियंता प्रो0 आर0 एन0 राय की गरिमामयी उपस्थिति में हुआ। प्रतियोगिता में डॉ0 मोहन तिवारी, डॉ प्रतिभा त्रिपाठी, देवेंद्र वर्मा, मोहनी, स्वाति उपाध्याय, आनंद मौर्य और संस्थान के कई खिलाड़ी उपस्थित रहे।

वहीं 18 फरवरी को विश्वविद्यालय के नवीन परिसर में स्थित खेल मैदान में अंतर्विभागीय वार्षिक खेल प्रतियोगिता के अंतर्गत आयोजित वॉलीबॉल मैच में कुलसचिव ब्रिगेड ने कुलपति ब्रिगेड को रोमांचक ढंग से पलटवार करते हुए हराया। कुलसचिव ब्रिगेड की ओर से श्याम कुमार ने शानदार खेल दिखाया। निर्णायकों के रूप में अरविंद यादव, कन्हैया और अनुराग श्रीवास्तव ने अपनी भूमिका निभाई।

नारी सशक्तिकरण के बिना मानवता का विकास अधूरा हैः कुलपति

06 मार्च। संत कबीर सभागार में यौन उत्पीड़न रोकथाम प्रकोष्ठ द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में 'नारी शक्तिः परिचर्चा' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे कुलपति प्रो0 मनोज दीक्षित ने कहा कि समाज के किसी एक वर्ग के सशक्त होने का अर्थ दूसरे वर्ग का असशक्त होना नहीं है। महिला के सशक्त होने से पुरूष कमजोर हो जायेगा, यह मात्र भ्रम है। कुलपति ने कहा कि सशक्तिकरण का अर्थ अपनी भूमिका का सर्वश्रेष्ठ निर्वहन है। आज की नारी तेजी से आगे बढ़ रही है। समाज के विकास में अमूल्य योगदान दे रही है। नारी सशक्तिकरण के बिना मानवता का विकास अधूरा है।

संगोष्ठी को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि पूर्व पुलिस निरीक्षक सत्या सिंह ने कहा कि महिलाओं को अपनी शक्ति के आत्मबोध की आवश्यकता है। समाज को अपनी शक्ति का आभास कराने से पहले महिलाओं को स्वयं अपनी शक्ति का आभास करना होगा। उन्होंने कहा कि स्वयं को शक्तिशाली बनाकर पूरे समाज का सशक्तिकरण कर सकते हैं।

विशिष्ट अतिथि डॉ0 मृदुला राय ने कहा कि नारी को बेचारी कहना गलत है। क्योंकि नारी में ही संसार की सारी शक्तियां निहित हैं। उन्होंने कहा कि एक लम्बे समय तक महिलाओं को शिक्षा से वंचित रखा गया है जिससे उनकी स्थिति दयनीय हो गई। कार्यक्रम का संचालन प्रकोष्ठ की समन्वयक डॉ0 तुहिना वर्मा ने और धन्यवाद ज्ञापन डॉ0 नीलम यादव ने किया।

इस अवसर पर मुख्य नियंता प्रो0 आर0एन0 राय, प्रो0 आशुतोष सिन्हा, प्रो0 नीलम पाठक, डॉ0 शैलेन्द्र कुमार, डॉ0 शैलेन्द्र वर्मा, डॉ0 विनय मिश्र, डॉ0 दिनेश सिंह, डॉ0 वन्दिता पाण्डेय,गायत्री वर्मा सहित बड़ी संख्या में छात्राएं उपस्थित रहीं।